

Vigyan Manush Ki Rachna Nahi Khoj Hai

Date : 29th March 1975
Place : Mumbai
Type : Seminar & Meeting
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 08
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

Practical करके आप से बताया था कि सहजयोग क्या चीज़ है, उसमें क्या होता है, यह कैसे घटित होता है। उसी का मैंने वैज्ञानिक व्याख्या भी दी थी, Scientific definition दिए थे। आखिर science जिसे हम science, science कहते हैं, यह परमात्मा ने बनाया हुआ नहीं है, यह मनुष्य ने जो जो खोजा हुआ है उसे वह science कहता है। लेकिन उसने संसार की कोई भी चीज़ बनाई हुई नहीं है। उसका कोई भी नियम उसका बनाया हुआ नहीं, कोई सा भी शास्त्र उसका बनाया हुआ नहीं है। गणित का शास्त्र भी उसका बनाया हुआ नहीं है। उसके नियम, उसकी विधि, यह सब परमात्मा की बनाई हुई है। जैसे कि आप देखिये कि एक Circle होता है और उसका जो व्यास होता है उसके व्यास और उस व्यास की परिधि में जो एक ratio होता है, proportion होता है, वह आपने बनाया हुआ नहीं है। उसका नियम परमात्मा ने ही बनाया हुआ है कि वह इससे ज्यादा होगा या इससे कम होगा। ऐसा भी नहीं हो सकता है, वह जितना है वह उतना ही रहेगा। उसका ratio बँधा हुआ है। सब नियम जितने बनाए गये हैं वो परमात्मा ने बनाए हुए हैं। आप लोगों में से बहुत से लोगों ने मुझसे पूछा है कि माताजी आप साढ़े तीन कुण्डल कहती हैं, कुण्डलिनी के साढ़े तीन कुण्डल क्यों कहती हैं ? एकदम scientific बात है। जो समझने वाला है वह समझ सकता है। आपने कभी घड़ी को देखा है क्या ? घड़ी में आप देखें तो circle का जो व्यास होता है जिसको कि आप diameter कहते हैं और जो circumference होता है, तो अगर वह सात हो तो यह बाइस होना पड़ता है, उससे ज्यादा नहीं होगा कम नहीं होगा, यह सात होगा तो वह बाइस होगा। उसका relationship हमेशा 22 व 7

होगा। और उनका एक co-efficient बनाकर () पाया बनाया है। यह science है। न तो वह सात से आठ होगा अगर आठ होगा तो उसी proportion में होगा। हमेशा एक ही proportion में रहेगा। अब सात क्यों है diameter ? जब बिन्दु में से, मध्य बिन्दु में से diameter गुजरता है तो उसे सात होना पड़ता है। इसी प्रकार हमारे अन्दर जो सुषुम्ना गुजर गई है उसको भी सात होना पड़ता है, उसमें भी सात चक्र बनाए हैं। और उसे साढ़े तीन इसलिये होना पड़ता है क्योंकि diameter को आप आधा कर दीजिए तो साढ़े तीन हो जाएगा। अगर आप साढ़े तीन वलय बनाएं, उस पाया के ratio में आप अगर साढ़े तीन वलय बनाएं, एक के ऊपर एक, कुण्डलिनी जैसे और बीच में से आप लकीर खींच दें तो उसके बराबर सात टुकड़े हो जाएंगे, लेकिन वो साढ़े तीन वलय होगा। है कोई यहाँ scientist या mathematician ? कहाँ है ? बराबर है कि नहीं ? साढ़े तीन वलय के बाद इस तरह से बनाएंगे एक के ऊपर इस तरह से साढ़े तीन वलय बनाएंगे और बीच में से जब उसके बीच मध्य बिन्दु को छेदकर निकालेंगे तब उसके अन्दर में वह सात जगह कटेगा और इसीलिए अपने अन्दर सात चक्र हैं। लेकिन circumference का हिसाब किताब अलग लगता है कि बाइस का आप ग्यारह करें तो ग्यारह होता है। देखिए कितना गणित है ? हरेक चीज़ का कितना गणित है आप देखिए जो मध्य में चीज़ चलती है तो सात के हिसाब से चलती है और जो उसके प्रकार में चलती है उसका जो प्रकार होता है वह ग्यारह के हिसाब से चलता है। इसीलिये अपने यहाँ अगर आज किसी को रुपए देते हैं तो ग्यारह देते हैं। अब आपको समझ में आया होगा कि ग्यारह का क्या महत्व है।

हमारे शास्त्रों में जो चीजें लिखी हुई हैं ये अनादि हैं। उसको बड़े-बड़े गणितज्ञ भी समझ नहीं पाएंगे क्योंकि साधुओं ने जो खोजा वह लिख दिया। उन्होंने लिखा कि कुण्डलिनी साढ़े तीन बार लपेटे हुए एक coil है, एक कुण्डल है लेकिन यह नहीं बता पाए कि वह ऐसे क्यों है। Scientist बता पाएंगे कि आप साढ़े तीन इस तरह से लपेटिएगा तो पूरा circumference उसका cover हो सकता है। उसके बगैर हो ही नहीं सकता है। और बराबर सात ऊपर से नीचे तक छेद दीजिए उसमें बड़ा सा चक्र तैयार हो जाएगा। अब scientist इधर में खोज रहे हैं और उन्होंने उधर खोज लिया। अब इन दोनों के बीच एक अधूरापन है, वह सहजयोग से पूरा हो सकता है। सहजयोग science जहाँ रुक गया है, science जहाँ झुक गया है और science जहाँ हार गया है वहाँ उसको आशा दे सकता है और उसे बता सकता है कि जो उन्होंने बताया है वही तुम्हारी किताबों में लिखा है। परिभाषाओं का फर्क है। उसका कारण क्या है ? सहज योग उन साधुओं को भी पर्याप्त में ले जाता है, उन ऋषि मुनिओं को भी पर्याप्त में ले जाएगा जिन्होंने खोज के निकाला है। आपको आश्चर्य होगा, पर है बात सही। हमने बहुत बड़े साधु योगीराज देखे हैं वे ऐसे यहाँ पैसा पैसा इक्कठा नहीं करते फिरते हैं, वे बहुत बड़े जन हैं। वे अपने संसार से बाहर रहकर के और संसार की vibrations से सेवा कर रहे हैं। किन्तु हमने अभी तक किसी भी ऐसे आदमी नहीं देखा है कि जो आप लोगों जैसे कुण्डलिनी को उठा सकता है। एक इशारे से, सिवाए गणेश जी को छोड़ कर। गणेश के हाथ में जो एक छोटा सा साप होता है वही आप की कुण्डलिनी का प्रतीक है। सिवाए गणेश जी को

छोड़ कर और आप लोग जो मेरे बेटे हैं व मेरी लड़कियाँ हैं, जो मेरे सहस्रार से पैदा हुए हैं, मैंने किसी को नहीं देखा है जो कुण्डलिनी को इशारे पर खड़ी कर दे। बात सही है। इसमें बहुत से लोग यह कहेंगे कि भई ये कैसे ? इन लोगों ने इतनी मेहनत करी, इतना किया, यह कैसे ? एक पते की बात आपको बता दें जो कि राजा का मंत्री होता है वह सबकुछ जानता है कि राज्य को कैसे चलाना है और वो राज्य का सारा कार्यभार संभालता है। सबकुछ है, लेकिन जो घर की लक्ष्मी होती है, रानी होती है, वह अपनी चाबियाँ अपने बच्चों के हाथ में देती है, लेकिन मंत्री के हाथ में नहीं देती। होंगे पढ़े लिखे, बहुत विद्वान होंगे, होंगे बहुत पहुँचे हुए पुरुष, लेकिन मेरे सहस्रार से पैदा जो नहीं हुए हैं जब तक वे इस बात को मान नहीं लेते कि वे मेरे बेटे हैं उनको यह अधिकार मिल नहीं सकता और मिला भी नहीं। इसके लिए बहुतों ने मुझसे सवाल जवाब किए हैं अपने शिष्यों ने भी कि माताजी हम उनके पास गए थे, गुरुजी के पास गए थे, वह इतने बड़े आदमी हैं, आप उनको मानती हैं पर उनको तो यह काम नहीं आता जैसे हमें आता है। हमें तो मालूम है कि कौन से चक्र कहाँ पकड़े होते हैं, कहाँ कैसा होता है, हम तो यूँ करके ऐसा हाथ कर देते हैं तो दूसरों के चक्र छूट जाते हैं और हमारे इशारे पर हजारों की कुण्डलिनियाँ उठती हैं और हम सबको पार करा देते हैं। यह कैसे ? वजह यह है कि तुम सब मेरे सहस्रार से पैदा हुए हो। एक और ऐसा इन्सान है ईसा मसीह जो कि माँ के हृदय से पैदा हुआ था। उसको भी यह अधिकार है। लेकिन वह समय भी ऐसा नहीं था कि वह यह काम कर सकता। पर आज वह समय भी आ गया है और तुम लोग तैयार भी हो गए हो। अब तो हो सकता है कि तुम कहो कि हम तो सामान्य लोग हैं, हम

अत्यंत सामान्य हैं और हम यह कैसे काम कर सकते हैं ? पता नहीं, लेकिन करते हो तो न, इसमें तो कोई शंका नहीं है तुम लोगों को कि तुम सबकी कुण्डलिनियाँ देख सकते हो, जान सकते हो और समझ सकते हो कि किसका हृदय चक्र पकड़ा है, किसका क्या पकड़ा है और उसे कैसे निकालना है और कैसे ठीक करना है। हजारों भूत बाधाएँ और बीमारियाँ और दुनिया भर की चीजें तुम लोग निकाल कर फेंक देते हो। और इन लोगों को देखिए, मैंने बड़े-बड़े महन्तों को देखा है कि हम वहाँ गए थे, हमें भी लकवा मार गया क्योंकि हमने किसी का लकवा ले लिया। तुम्हें तो न लकवा मारता है न कुछ नहीं मारता है। जब से तुम लोग पार हुए हो गए तुम्हारी तन्दुरुस्ती ठीक हो गई। अगर किसी की खराब हो भी जाए जरा तो वह यूँ ही ठीक हो जाती है। खैर छोड़िए। यह तुम लोगों के अनुभव हुए हैं। इस पर राहुरी में भी मुझसे प्रश्न हुआ था। वहाँ मैंने इतनी openly बात नहीं कही थी लेकिन बात यह है कि तुम मेरे सहस्रार से पैदा हुए हो। मेरे सर से मैंने तुमको पैदा किया हुआ है इसलिए तुम्हारे लिए विशेष अधिकार है। तुम लोग विशेष अधिकारी हो। मानती हूँ कि बाकि जो लोग हैं वे भी सहजयोग से पार हुए हैं। बड़े-बड़े साधु सन्त भी सहजयोग से पार हुए हैं। अविरल क्रियाएँ करके, हजारों वर्ष तपस्या करके। लेकिन उनके अन्दर अभी तक acceptance नहीं है मेरी।

आज आपसे मैं खोलकर कह रही हूँ कि आप जब तक मुझे accept नहीं करिएगा तब तक यह काम नहीं होगा। मैंने यह बात पहले नहीं कही। जैसे कृष्ण ने कहा है कि "सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकम शरणं ब्रज।" ऐसी ही मेरी भी बात है। जैसे कि Christ ने कहा था "I am the Light,

I am the Path", वही मेरी भी बात है। I am the Destination not only the Path । लेकिन मैंने यह बात आज तक आप लोगों से कही नहीं थी। इसलिए क्योंकि पिछले अनुभव इतने खराब रहे। इसी वजह से मैंने बात नहीं की। आप लोगों को मेरी शरणागत लेनी पड़ेगी, मुझे माँ मानना पड़ेगा और मेरा बेटा बनकर के जीना होगा। उसके बगैर आपका कार्य नहीं होगा। इसी एक छोटी सी वजह के कारण आप लोग इस दशा में पहुँच गए कि बड़े-बड़े सन्त महात्मा लोग हार गए लेकिन वह नहीं पा सके। एक तो मेरा साक्षात् उनसे नहीं हुआ और दूसरी चीज अभी उनमें अहंकार बना हुआ है, कुछ स्वीकारे ही नहीं हैं। क्योंकि वो अन्जान में पार हो गए, उन्हें पता ही नहीं कि उनकी माँ कौन है। लेकिन तुमने मुझे जाना है तब तुम लोग पार हुए हो। यह समझ के रखो कि जरा सा तुमने इधर उधर कदम डगमगाया तब vibrations तुम्हारे छूट जाते हैं। तब तुम कहते हो माताजी यह तो All pervading है तो यह vibrations कैसे छूट जाते हैं ? All pervading में भी कहाँ से vibrations जाते हैं, सोचना पड़ता है। आप लोग कहीं भी रहें, किसी भी जगह रहें, जिस वक्त आप लोग सहजयोग के विरोध में अगर एक अक्षर भी कहेंगे तो आपके vibrations छूट जाएंगे और उसके बाद आप जो भी कार्य करेंगे जिस भी कार्य में आप रहेंगे उसमें भूत आपका साथ देंगे, माँ नहीं देने वाली। मैंने ऐसे भी लोग देखे हैं जो मेरे यहाँ आते हैं थोड़े दिन vibrations लेते हैं और उनके ऊपर जब कुछ भूत बाधाएँ चढ़ जाती हैं तो वे भूत बाधा का काम करने लगते हैं। उनका ढंग और हो जाता है, उनका तरीका और हो जाता है। उनका बताना और हो जाता है। फिर वह कुण्डलिनी नहीं देखते हैं, वो ये बताते हैं कि घोड़े का नम्बर कौन सा है, तेरे बाप

का क्या होगा, तेरे माँ का क्या होगा, असलियत में नहीं आते। ऐसे अनेक लोग हमारे इस सहजयोग में आए और बिछड़ गए, थोड़े दिन रहे बिछड़ गए फिर उन्होंने थोड़े दिन काम वाम किया इस तरह का, बड़े अपने को साधु गुरु महात्मा समझकर के काम किया और उसके बाद देखा यह गया कि उनके ऊपर बाधाएँ जम गईं और वो बहुत ही नुकसान व तकलीफ में फँस गए। इसीलिए एक बात आप जान लीजिए कि सहजयोग के विरोध में बात करने से, मैं चाहे आपको माफ कर भी दूँ लेकिन परम पिता परमात्मा आपको कभी माफ नहीं करेंगे। हमारे घर में मेरी अपनी लड़की का मैं आपको बताती हूँ कि एक दिन जरा सी गुस्सा हो गई मेरे ऊपर, फौरन उसके कान में से गरम गरम हवा निकलने लगी। उससे मैंने कहा कि तुम कान अपने रगड़ लो और कहो की माफ कर दो। मुझसे ऐसी बात कहना गलत है। सहजयोग के विरोध में तुमने एक अक्षर कहा, हालाँकि तुम मेरी अपनी लड़की हो लेकिन तुम्हें अधिकार नहीं है। यह सबसे बड़ी अनाधिकार चेष्टा है जो मैं आपके सामने आज खड़ी हूँ। यह आप लोगों के बुलाने का फल है। ऐसे भी देखिए कि मन्दिरों में मस्जिदों में, और जहाँ-जहाँ भक्त लोग माँ को पुकारते हैं तो माँ का हृदय उछलने लग जाता है। आपने देखा है कि आप जब कभी जरा सा भी आप गाना गाते हैं तो मेरे बदन से अनगिनत vibrations बहने लग जाते हैं। अगर कहीं भी मैं जरा सा गाना सुन लूँ या record सुन लूँ या cinema में ऐसा दिखाई दे जहाँ माँ को पुकारा जा रहा है तो मेरे सारे बदन से जैसे करोड़ों रश्मियाँ फूट पड़ती हैं जैसे vibrations निकल रही हों। यह आपने भी जाना हुआ है। यह आपने भी देखा हुआ है। इस चीज़ को आप भी समझते हैं कि ऐसा माँ को होता

है। आज वह समय आ गया है कि आप ही का माँगना, आप ही की चाहत, आप ही लोगों की पुकार साकार मेरे अन्दर घुस जाए। मैं स्वयं से नहीं आई हूँ। मैं आप ही की पुकार से आई हूँ। आपके आनादि काल से जो पुकार व चिल्लाहट हो रही थी उसी के कारण मैंने यह शरीर धारण किया और अब भी आप ही लोग जो सर्व साधारण जन हैं, मुझे पहले पहचानेंगे और जो यह बड़े-बड़े साधु सन्त और बाबाजी बन कर बैठे हैं यह पहचानेंगे नहीं, जैसे न इन्होंने सीता को पहचाना था न राधा को पहचाना था न मेरे को पहचाना। और अब भी यह लोग नहीं पहचान पाएंगे। यह अब भी बड़े घमण्ड में बड़े बाबाजी बनकर बैठे हुए हैं। जो इन्सान अपनी माँ को भी नहीं पहचानता है उसको बाप क्यों पहचानें ?

सहजयोग को खिलवाड़ नहीं समझना चाहिए। सहजयोग को एक साधारण चीज़ नहीं समझना चाहिए। यह बड़ी अनुपम, अजीब, अजीबो गरीब चीज़ आई है। क्या आपको कभी किसी किताब में ऐसा लिखा मिला है कि अगर यह आपका चक्र पकड़ता है तो यह विशुद्धि चक्र है। क्या आपको कहीं पता हुआ है कि नाभि चक्र होता है और यह सहस्रार होता है ? आपको कभी किसी ने यह बातें बताई हैं क्या ? आपको कुण्डलिनी के बारे में किसी ने भी इतने खुल्लमखुल्ला कोई बात बताई है और दिखाई है क्या ? किसी ने भी इस तरह से संसार में आज तक, हमने भी पहले कभी भी यह कार्य नहीं किया जैसे आज हो रहा है। लेकिन आप लोगों का आधा अधूरापन इसको खत्म कर देगा। आप जो लेने आए हैं वो बहुत बड़ी चीज़ है बहुत ही बड़ी चीज़ है। उसका अन्दाज ही आपको आज नहीं है। एक दिन आएगा, चाहे मेरे ही आँख के सामने आजाए या बाद में आए, जब संसार में यह

पता हो जाएगा कि हम लोग अब एक नए आयाम में dimension में उतर गए हैं। लेकिन आप लोगों का आधा अधूरापन, हो सकता है कि, संहार की गति शीघ्र कर दे। धर्म का चक्र उल्टा घूम रहा है, यह आप जानते हैं और वह दिखाई दे रहा है। उसको सीधा घूमाने का कार्य सिर्फ सहजयोग से ही हो सकता है लेकिन जो लोग सहजयोग में आ रहे हैं उनको अत्यन्त धार्मिक, अत्यन्त सदचित्त और अत्यन्त उदार चित्त होना पड़ता है। धर्म की पूर्ण व्याख्याएं उनको सीखनी हैं। सिर्फ vibration से नहीं होता है। बहुत से लोग मेरे सामने आते हैं तो बड़ी जोर-जोर से vibration उनके अन्दर आते हैं और जब बाहर चले जाते हैं तो ऐसे नहीं होता है। ऐसा तो हर जगह ही आना चाहिए आपको। ऐसी कौन सी जगह है जहाँ हम नहीं हैं? हर जगह यह vibration आने चाहिए आपको और इतने बलवत्तर होने चाहिए कि किसी भी प्रकार के काले vibration इसके ऊपर नहीं चढ़ें। क्योंकि आप जीवन्त हैं। अभी हम राजन गांव के गणपति के पास गए थे। वहाँ हमने देखा कि राजन गांव के गणपति को, उस गणपति में से बहुत थोड़े-थोड़े vibration आ रहे थे। और जो लोग हमारे साथ थे वे इतने आश्चर्य चकित हो गए कि जब जागृत स्थान है तो इसमें vibration इतने कम क्यों आ रहे हैं? मैंने कहा कि पहले तो यह बात सोचो कि इसको पहचाना किसने कि यह जागृत स्थान है। यह मनुष्य ने किया है? जिसने पहचाना कि यह जागृत स्थान है वह कोई न कोई साधु सन्त रहा होगा कि उसने यहाँ vibration देखे होंगे और कहा होगा कि यह जागृत स्थान है। फिर जब वह जागृत पत्थर लाया गया तो हो सकता है किसी ने उसे shape देने के लिए थोड़ा बहुत चलाया हो, हो सकता है नहीं भी हो सकता।

क्योंकि मनुष्य की अक्ल अपने जैसी दौड़ती है न। उसको छूने की कोई जरूरत नहीं थी। उसके बाद उसके जो पुजारी जो हमने देखे उनके सबके चक्र पकड़े हुए थे। वह जितने भी पुजारी हैं और उनके चक्र पकड़े हुए हैं और उसपर जो सिन्दूर चढ़ाया था और जो बेल चढ़ाया था वह सब पकड़ा हुआ था। मनुष्य को इतनी अक्ल जरूर है कि यह जागृत स्थान है लेकिन इतनी अक्ल नहीं है कि अब भी इसमें से vibrations पूरे आ रहे हैं कि आधे आ रहे हैं कि कौन से vibrations आ रहे हैं। तीन चक्र उस मूर्ति के भी पकड़े हुए थे। और मेरे समझ में नहीं आया। जब मैं अन्दर मंदिर में जाकर बैठी तब पंडित जी कहने लगे कि आप अन्दर नहीं बैठ सकते। आप बाहर बैठिए और आप उनको हाथ नहीं लगा सकते। तो मैंने यह सोचा कि अगर हम इसको हाथ भी नहीं लगा सकते तो इसको हम क्या कर सकेंगे? यह मूर्ति तो ऐसी ही रह जाएगी। तो पीछे से गए और पीछे से जाकर के वहाँ उस मूर्ति की ओर हमने देखा और पीछे से अपना सर, अपना सहस्रार ही जाकर लगा दिया तो उसके अन्दर से इतनी जोर से vibration निकल आई। इसलिए यह जान लेना चाहिए कि आप जीवन्त हैं। आपके अन्दर कहीं अधिक, इन मंदिरों से भी अधिक, vibrations आ सकते हैं। आप मगर जीवन्त रहिए। मरी हुई चीजों का तो जो लोग शौक करते हैं या मरी हुई बातों का शौक करते हैं वे लोग मर जाते हैं। जिन्दा होते हुए भी मर जाते हैं। जड़ वस्तुओं के पीछे में भागना एक इस तरह का शौक है। उसकी ओर भागना या उससे भागना दोनों एक ही चीज है। सन्यास भी लेना वही चीज है और सन्यास से भागना भी वही चीज है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। आप अपनी स्थिति पर खड़े हो जाए।

पहली चीज़ है आप अपनी स्थिति बनाइए। दूसरी चीज़ अपना धर्म बनाइए। धर्म का मतलब है आप अपने अन्दर में से इन vibrations को पूरी तरह से बहने दीजिए। आपका मन होता है कहीं गए। आपने देखा वहाँ एक आदमी गिर गया, दौड़िए, उसको फौरन पकड़िए, उसे vibrations दीजिए, बचाइए। दुनिया कहेगी, कहने दीजिए। आपके अन्दर से vibrations बह रहे हैं, यही आपका धर्म है। मैंने आपसे बताया था कि सोने का धर्म यह नहीं कि वह पीला है। उसका धर्म यह भी नहीं कि उससे कुछ जेवर बन सकते हैं। उसका धर्म बस एक ही है कि वह किसी चीज़ से खराब नहीं होता। इसी तरह हीरे का भी एक ही धर्म है कि वह हर चीज़ को काट सकता है व hardest है। इसी प्रकार मनुष्य का एक धर्म होता है कि उस परमात्मा को पा लेना और जान लेना और जिस मनुष्य ने उसे पा लिया है उस मनुष्य का एक ही धर्म होता है कि उस पाई हुई चीज़ को पूरी तरह से आत्मसात् करके पूरे संसार में प्रसारण करे। लेकिन इधर उधर की बातें और वही जड़ता के तरीके, उससे आप बिल्कुल न तो इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे। आपके vibrations खो जाएंगे और मेरी जितनी भी मेहनत है सब बेकार हो जाएगी। कोई भी धर्म संसार में ऐसा नहीं है जिसने vibrations की बात न कही हो। माने असली धर्म। किसी ने भी ऐसा नहीं कहा है कि vibrations नहीं होते हैं। हर एक जगह इसे रूह कहते हैं, इसे water of life कहते हैं कुछ भी कहते हैं लेकिन हर जगह कहा है कि vibrations होते हैं और हिन्दु धर्म में तो साक्षात् आप जानते हैं कि इसी पर न जाने कितनी विवेचना की गई है। आदि शंकराचार्य ने भी। इसमें कुछ पढ़ा नहीं जा सकता, कुछ लिखा नहीं जा सकता, कुछ समझा नहीं जा सकता। यह

होना होता है। बहुत से लोगों को होता नहीं है। जो पढ़े-लिखे अपने को विद्वान समझते हैं, ऐसे महामूर्खों को कुछ नहीं होता। मैं क्या करूँ यह तो अपने आप ही अकस्मात् आपको innocent में ही होता है, बहुतों को हो जाता है, हजारों को होता है आप को भी होना चाहिए। लेकिन बेकार की झूठी बातों को आप पकड़ कर रखिएगा। और अगर आप झूठी बातें करियेगा और झूठी बातों में ही आप पूरी तरह से जमे रहियेगा जो आप को जड़ बना रही हैं तो इस जड़ता से आप भी तो जड़ ही हो जाएंगे। जो चैतन्य आपके अन्दर से बह रहा है उसको आप कैसे किस प्रकार प्रसारित कर पाए। थोड़ा बहुत समय इसके लिए देना पड़ेगा यह मैं पहले कह चुकी हूँ, यह बात सही है। लेकिन यह priority की चीज़ है। आपके priority बदलने पड़ेगी। थोड़े दिन जब इस priority आ जाएंगे तो इसका मजा आपको आने लगेगा। सारे संसार में जितना सुख और मजा है सारे संसार का जितना आकर्षण और सौन्दर्य है, सारे संसार का जितना भी धन दौलत सब कुछ जो भी है, जो कुछ भी जिसे आप दौलत, सब कुछ, जो भी है, जो कुछ भी जिसे आप knowledge कहते हैं, जिसे आप ज्ञान करके समझते हैं। उन सबका स्रोत यह है। ये जानता भी है, प्यार भी करता है और सौन्दर्य भी है। यही वह शक्ति है जिसके बारे में हमने हजारों बार पढ़ा है और हजारों बार इसके बारे में हमने जाना है। इसी शक्ति के सहारे सारी सृष्टि की रचना हुई है और इसी के द्वारा आप भी उसको जानेंगे जो यह शक्ति है। यह एक बहुत बड़ी बात है। वह धीरे धीरे फैलना चाहिए। इतनी बड़ी बड़ी बात इतनी जल्दी नहीं फैलती, कोई सी भी जीवन्त चीज़ है धीरे धीरे पनपती है। मैं देखती हूँ जड़ जम गई है, उसकी जड़ बहुत गहरी जम गई है। अभी मैं शहरों से



होकर आई हूँ। मुझे बड़ी खुशी है कि वहाँ के scientist लोगों ने इसे बिल्कुल scientifically कर दिया। अपने पौधों पर, इस पर, उस पर experiment करके एकदम scientific चीज़ बना ली है और वे कह रहे थे कि हम government से भी इसके लिये लड़ेंगे कि यही चीज़ सत्य है और बाकि सारे जितने भी असत्य हैं उसका नाम सत्य देने से वह सत्य नहीं होता। आपकी अपनी शक्ति आपको अपनी शक्ति उस शक्ति से एकाकार हो जा रही हैं जो आप के अन्दर बसी हुई हैं। जैसे कि जमना में बहुत से मटके रहते थे और उन मटको में पानी रहता था। जब उन मटको में छेद हो जाता था तभी वह पानी और उन मटको का पानी एकाकार हो जाता था उसी तरह से अपना भी हाल होना चाहिए। आप भी उसको उसी तरह

से जाने व पाएं जैसे कि गोपी और गोप कृष्ण के जमाने में खोज रहे थे। और जानने के प्रयत्न में थे और आज आपको वह चीज़ पूरी तरह से मिल गई है। मैंने आपको अनेक बार बताया है कि गोप से गोपनीय इसको जितनी भी गहराई की बातें हैं मैं सब आप को बताने के लिए आई हूँ। लेकिन आप उसके अधिकारी हो जाएं। जिनको अधिकार ही नहीं है उनको यह बात नहीं बता सकती थी। इसीलिए जो बात आज मैंने सर्वप्रथम कही है इससे पहले कभी भी इतना खोलकर कही नहीं। आप में से यदि किसी को प्रश्न पूछना हो तो एक दो आदमी को पूछने दीजिए। जिसे प्रश्न पूछना है कृपया प्रश्न पूछें। जरूर पूछना चाहिए प्रश्न। क्योंकि मुझे पता ही नहीं तुम लोगों का क्या प्रश्न है।